



नः ॥ अथ वत मरिद ॥ अथ काय च तहिका
यतिपत्रिमानया सुक या जना ॥ ॥ २ ॥
विनि कालिक ॥ धर्म ॥ सार्वभौम ॥ माधव ॥ अ
तिनाथा यति ॥ नन्दन ॥ श्री ॥ दिन ॥

[illegible]

२ मास॥ ककु॥ अमास॥ धृतिनाया पवान्न
नि विवात॥ गुतागुती॥ २ म्म वज्रादिद्व
१५॥ वेष्ठावधृतिनाया वा न घटिद्रुह॥
२ चित्यारुत॥ थ० सु॥ थका॥ अद्य सर्वे
कार्ययाय मतः स सिद्ध॥ ६ अ वत समान
सयात सा र य मा नी वा ल्पा य मा नी व॥ ७ का
न स या त सा कार्य या त सा ह निक र य
क व म्म ए न्म द्रु व॥ ८ अ म्म ग्थ च डि स ना
व कं या य मा न्द्र कार्थ सिद्धि र य न्द्र वा॥
॥ दिन पा सिं दि न थ उ त म या कि ध य थ स
म सं कार्य वि वा न या दी घ टि जा न

आदिदात्रयक॥ आदिहकाय॥ नागपूजाया
 ना. न. उ. ह. वि. म. म. म. म.
 म. म. म. म. ॥ म. तिथि. १. १०॥ म. व. न. ॥ म. व.
 तिथि. १. ८. १०॥ १३॥ १५. वा. व. ॥ म. व. म. व. म.
 १३॥ वा. न. १ ॥ ह. उ. ॥ ॥ तिथि. १०. १५
 वा. न.

दवपाग्रनः दिन इति

उ. ३. ना. म. ह. वि.

म. न. म. म. म. म. म.

तिथि. ५. १०. १५

वा. न. १. ५. ६. न. न.

१. ३. ६. १२

वा

आदि का दाय॥ २. सिधन दाय॥ २. कि वाइ काय॥

कृती का. पृष्ठा॥ असु निज. न. न. न.

आहिनिः उ. ग. ॥ म. म. म. वि. सा. वा. वा.

स्वाति २॥ तिथि॥ म. वा. तिथि ३॥

१॥ २॥ ५॥ ७॥ १०॥ १३॥ १५॥

१०॥ १॥ वा. न. ॥ वा. न. ॥ १॥ २॥ ३॥

१॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥

न. व. ति. तिथि. १॥ २॥ ५॥ ७॥ ध. न. जो. सि.

एतन्मरकाया ॥ २५ ॥ विविदीत ॥
 अथैव न्य ॥ मृगमित्रः सद्यः हि न
 मतरिषाः विलासा ॥ नान्नाद्यः हस्तः ह्यपि
 प्रकाः हस्तः पुनर्वसु ॥ २६ ॥ उग्ररुद्रगति
 नवतीः जसुनिः तिथि ॥ २७ ॥ उग्ररुद्रगति
 ३ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ॥ तिथि ॥ २८ ॥ २९ ॥

शशियात्रायुतामत्रायुतास्य ॥ नमस्तु सफमस्तु अस्तु
 मस्तु पंचमस्तु अतिथानस्तु अहग्रहानां अथवा
 षनिता ॥ अथवा वस्तुमाषमस्तु दशमस्तु उकाद
 म वस्तुमाषानि अथवा शशियात्रायुता ॥ मतिश्वनताम
 सवानता अथवा षनता अहग्रहनंतामस्तु नमनि
 ता कस्तुसमशानिता मृगशिरसा ॥ नमन्याक इ
 तीय पंचम सफम उकादश षम अतिथानस्तु
 वस्तुमाषानि आदित्य ग्रहस्थिति वृध अतिस्त्वनि
 ता विवाहकर्मयाय चनरुता ॥ पंचम नतामस्तु कस्तु
 स अहग्रहानता अथवा नय ॥ इतीय दशम उकाद
 श अहमपाद ३ पंचमस्तु नतामस्तु पाद २ सफम
 मस्तु ३४ सनिता

प्रतिदश नडामि पूर्व बुक्तायनी ॐ उदवना न
 रिगांग हेनव अनियत्र कान पूजा ॥ १ ॥ पंचमि
 यादसि दकि (ह) वागाही कपान हेनव रुर्मदवता
 वृहस्पतिवान पूजा कान ॥ २ ॥ पश्चिम रवि ॐ द्या
 पनि नून हेनव वननाजा वष्टमी वदुदसि न
 मत्र पूजा कान ॥ ३ ॥ उरुन नूडायनी शुरु हेनव
 पीन रुयनदवता द्विगिया दम मि कान आदि
 स वा न पृ ६ गाति न ॥ कान ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ मि
 ५ वा मि ॥ ६ ॥ ला न महा ल मि ॥ दि व न हेनव
 ७ ॥ दि न ॥ कान या नी

५

२० नमः श्रीवली काये ॥ नृप नृवमायी का
 वल्लिखित ॥ ॥ मालका विधि स्तापना धून
 काठा श्रीसूर्यार्घ्य गुन्या दार्घ्य पंचगव्य ॥
 धन धन पूजा हा न स क ल्य ॥ कान हा ॥ नृमूक
 नाम ध्वज स्यः नृगृह नाम ना ॥ प्रसन्न कारः ॥
 गति प्रग दाय अनि दाय नडा ग्रहादि क्र प्रया व द
 य प्राप ॥ नृगृह स्ति न प्रग अनियत्र रुद्र या व द
 य स्ताना क न प्राप काम नार्थ ॥ नृद्विगृह भा किन्या
 दिनाना दाय नाना पद्रवादि भा किर्थ पूर्व क नाग
 ॥ क रुय स क ल्य पी जानि वा न ॥ नार्थः ॥ नृयूना नाह
 ॥ दि म ना रि मि न काम ना या नृरु स ह्वार्थ

आपनम्यश्चन पनम्यश्चनी. नृदहैवव. नृदमा
 हकाशीत्यर्थ. उदनमयं प्रतमर्हि. अनिश्चनक
 उद्यानादि. नडावल्याचन. नृमूकनामवलिनय
 हा. पूष्याशीहनपूजाकर्तु. दूदपूष्याशननसंक
 लययामहं॥ धनधययाय॥ ॥ रगवसमयस
 त्वविद्यानाशनमामुग॥ कर्तुमिच्छामिहैनाथ. प्र
 तिस्तोत्रदयाममः. मिष्यानामनृकपाय यम्याः
 कं पूजनायवः. नमवरगतस्यरगतवप्रभरकर्तु
 मर्हति॥ यथाहिसर्वसंवृद्धाधुमिगवृवसंस्ति
 तामायादव्यायथाकृको. नदगिष्टतिवृहाक
 तो. खवाफासर्वसंवृद्धावाधिसत्वायसर्वदा

दूहसमयसत्त्वहिसानिधुमर्हति॥ ॥ धनज
 प॥ धनध्यान॥ ॥ उंचलमहादेवीध्यायह
 गवतीगीवा. नफचामिकनाहोचविंशकाटिमम
 पूराभायीनार्हकस्तलीहीमाधिननांचावृहासिनी
 : किनिमिकुलभनि. कयूननापूराः नत्तमोला
 विविद्यागीहासमोलावसंविनि॥ नृदहादमरुज
 कांकादिव्यवस्तुद्रविताः खजवानानकथावकं
 वज्जीरुमधवावना॥ उमनृगूलयाप्रचदक्रिहान
 विष्मनिगाः सदकंधनूहस्तावगजहस्तावत्माः
 हिमा॥ पागनकीनिहस्तायखत्वाद्रकंगयागकं
 वित्पूडाकथासिद्धिसिंहासनापनिस्तिगा॥
 आपनम्यश्चन पनम्यश्चनी. नृदहैवव. नृदमा

वायव्यदायवश्वाग्रचन्द्रनायकाः यदायवद्वाने
 वेवचन्द्रनायकचिन्ता नमो वायव्यदायवमध्य
 चाग्निप्रगल्भिताः शिवनायककृष्णनीलाशुः
 कायचन्द्रिका ॥ पीतापाशूलाह्वयं शालिठा
 स्थाह्वयिकाः सहिष्वाहनस्तु पूमान्तिनल
 नवमूर्तिर ॥ ह्रस्वाद्याह्वयस्तु नवचन्द्रि
 उग्रवन्द्यदिकाक्रमाह्वयः चवंध्याश्वामहादेवीर
 गवतीनमस्तु ॥ ॥ श्री या पू ॥ ह्रस्ववती
 कायनमः स्वाहा ॥ ह्रस्वप्रवअयनमः स्वाहा ॥
 ह्रस्ववअग्रयनमः स्वाहा ॥ ह्रस्ववभुनाय

नमः स्वाहा ॥ ह्रस्ववभुनायनमः स्वाहा ॥ ह्रस्वव
 भुवनेनमः स्वाहा ॥ ह्रस्ववभुनायनमः स्वाहा
 ह्रस्ववभुनायनमः स्वाहा ॥ ह्रस्ववभुनाय
 नमः स्वाहा ॥ ॥ पू या श ॥ ॥ हुं मा नू नावर्तु
 संकार्गस्य ह्रस्वकविन्दुकः कामनूपीमहादेवी
 उग्रवन्द्यनमस्तु ॥ स. ध. म. जं ॥ थनयुक्त
 उल्लसन्तस्य तिस्रमाधि गणेश माध्यापि
 स्वाकृष्टमाधि ॥ थनवलिपूजा ॥ कायः ॥ धूपः
 थनकिन्दु ॥ ॥ हुं मा नू नावर्तुसंकार्गस्वप्रह
 रकविन्दुकं कामनूपीमहादेवी उग्रवन्द्यनमस्तु
 ॥ ॥ मध्यस्त ॥ थनमद्ययानमय ॥ हुं श्री हं ह

माहासानीविघ्ननाशय २३० रुट स्वाहा ॥ ३॥ ॐ
नमः श्रीकसहयाग्निरादिसिद्धि लांकः अवन
नरणीयुं रुट स्वाहा ॥ ॥ ध्यान ॥ सर्वनक्रमसं
पूरुः सत्त्वार्थकपनगमः विमखं वहुजं वेंव घ
नाघनसमृदिनं ॥ सत्त्वपर्येकवस्तुनं कपालम
कृष्णवः जिनवस्मिस्तुनंदहं प्रह्लादसमा संगि
नं ॥ वरुपर्यधनं वानं घनं राजनकामूकः विरा
नं लवयत्वार्यवृद्धयागं वनं स्वयं ॥ ॥ नृपा. पू
॥ स्वाहा वाय ॥ ॐ हं यागमवनाय स्वाहा ॥ ॐ नृपा
नडाकिर्न पन्नमः स्वाहा ॥ ॐ उग्रवन्तु यन्नमः स्वा
हा ॥ ॐ प्रवन्तु यन्नमः स्वाहा ॥ ॐ वंद्यग्रहाय नमः

स्वाहा ॥ ॐ वन्तु यन्नमः स्वाहा ॥ ॐ वन्तु कायन
मस्वाहा ॥ अश्वनी. रतुही. रुहिकायनमस्वाहा
॥ ॐ कायनीय स्वाहा ॥ नृपायनीय स्वाहा ॥ कोमानी
य स्वाहा ॥ वीष्नीय स्वाहा ॥ वानाहिय स्वाहा ॥ ४३
द्रायनीय स्वाहा ॥ चामूद्राय स्वाहा ॥ महानक्षत्रीय
स्वाहा ॥ ॐ वज्रवन्तु रेंवाय स्वाहा ॥ नृद्रवन्तु रेंवा
य स्वाहा ॥ ध्यानवन्तु रेंवाय स्वाहा ॥ वीलवन्तु रें
नवाय स्वाहा ॥ नलवन्तु रेंवाय स्वाहा ॥ विजयवन्तु
रेंवाय स्वाहा ॥ कालवन्तु रेंवाय स्वाहा ॥ यम
वन्तु रेंवाय स्वाहा ॥ अश्वकलनागनाजाय स्वाहा
॥ अश्वकलाय स्वाहा ॥ अश्वपर्वताय स्वाहा ॥ अश्व

मघाय स्वाहा ॥ श्रुतय पात्राय स्वाहा ॥ श्रुत
 यानाय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥ व
 नूतय स्वाहा ॥ कृतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥
 नेमन स्वाहा ॥ वायुय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥
 ॥ पू. मा. पा. ॥ ॥ ॐ मान्तावर्तुसंकासं रवप्ररु
 टक विन्दुधक. कामवृषीमहादवीसिगुवत्पुनम
 सुत ॥ वलि ॥ ॐ किं नीवं किं मूकसंकासं. धानद
 दृष्टयावहं. उदकं गविन्द्याक. कृतयानं वरुह
 दनः. प्रक्षिपति पतिगृह २२ ह २ पच २ स्वस्वः
 रवादि. महाविष्णु रववन्धन. वलि. यति. गृह २
 की २ रुं रुट स्वाहा ॥ कथमा ॥ १ ॥ चनपूर्वव

लोह

क्रयनीपूजा ॥ पीन ॥ किमह ॥ सुनापायं धुन वृन्द
 श्रुतसुगकविन्दुकं. वृक्षायावाहयदवीध्यानपूर्व
 नमस्तुत ॥ मध्यमान ॥ ॐ श्रीहो किंपनप्रयागविष्ण
 नागव २ रुं रुट स्वाहा ॥ धूपरुं रुम ॥ ॐ वृक्षाय भीत
 ह्याग्नि. वृक्षलोकं. श्रुतन २ श्रीधुं वृक्षरुं रुट स्वा
 हा ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ वृक्षाय नीपीमवर्तुसंकासं क
 मृखाहंसासनी. वरुहकृष्णलसिता. मलवकायी
 विन्दुपायं वृक्षपनरुजायां. श्रुतसुगकमपुनधुन
 हंसासनसिता. श्रीपनमपनी वृक्षाय नीलावयस
 ॥ श्री. पा. पू ॥ रुं रुट वृक्षाय नीय रुं रुट स्वाहा ॥
 वृक्षाय कीय रुं रुट स्वाहा ॥ वरुहवृक्षे नवामरुं रुट

स्वाहा॥ हंसागनिय इरुट् स्वाहा॥ ॐ प्रयोगक
 उपाना य इरुट् स्वाहा॥ वायुकीनागनाजाय इ
 रुट् स्वाहा॥ नागकम इक्राय इरुट् स्वाहा॥ दु
 खसुखनदीनाजाय इरुट् स्वाहा॥ वडग्रहान
 समन्तनाय इरुट् स्वाहा॥ प्रदिययानतामिय स्वा
 हा॥ नाहिनी मृगमिसा भ्राद्राय नमः स्वाहाः॥
 अदिष्टवानाय स्वाहा॥ पू मा जा॥ ॐ ब्रह्मायनी
 पूर्वपीतारामकाववीरुसंरुवा॥ स्वायध्विन्द
 पामुं वः नमस्तु हंसवाहिनी॥ ॥ वली॥ ॐ नमः
 काववीरुसंरुगमः पूर्वब्रह्मायनीयः इरुट् वरुं न
 मस्तु सर्वसत्त्वानां केरुमकिपासिंकु नू २०० देवली ख
 रखाहि २ व्रमायनी देवीय इरुट् स्वाहा॥ ॐ धा॥

धनउरुनसमाहवनी पूजा॥ किमह॥ ॐ नमः श्री
 माहवनी देवीय नमः॥ ॐ महापूर्वकपालसंवध
 ना तत्पत्रमिभूतनं नोडान्नावाहय देवी ध्यान पू
 ष्यं नमस्तु ग॥ मयपान॥ ॐ श्री श्री इहकासागिनी
 क्रयविघ्ननाभय इरुट् स्वाहा॥ धूपकपूज॥ ॐ क
 नोडायनी देवी नूड वाक नूवतन २०० प्रंकु नूड इ
 रुट् स्वाहा॥ ध्यान॥ ॐ माहवनी स्यनव भूरा हव
 वाहिनी वलुर्लका धनीः मूलतुगात्यां विन्दुपायं व
 मयनतुगात्यां वरुणिभूत धीन हीपनम्य धनीः
 माहवनी रावेय ग॥ ॥ श्री पा पू॥ इरुट् नू
 डायनीय नमस्वाहा॥ दिव्यरूपीणीय नमस्वाहा॥

ह्रस्वागनीयस्वाहा ॥ नृद्वयद्वहेननायस्वाहा ॥ काना
 नीक्रप्रपा नायस्वाहा ॥ धनांगकृच्यनायस्वाहा ॥
 मकंकनागनाकायस्वाहा ॥ ईवनहृकायस्वाहा ॥ म
 यूवपर्वनायस्वाहा ॥ लोहियायस्वाहा ॥ सनांग
 नदिनाकायस्वाहा ॥ कलंकस्मस्वानायस्वाहा ॥
 पूनवत्तः पूव्यः शूलषायस्वाहा ॥ द्वितीयादध
 मियस्वाहा ॥ सामवा नायस्वाहा ॥ नाभियस्वाहा
 ॥ पू ना पु ॥ ॐ माहं वनील्यतवः ॥ कका
 नवीजसंरुवा ॥ स्वायूधविन्दूपायं वनमसकृद्वय
 बाहीनी ॥ ॥ वसि ॥ ॐ श्रीकंककावनीजसंजा

मंडलनमाह ध्वनी सर्वस्वतानां सर्वप्रतानां मंति
 कुरु कुरु दस्त्राहा ॥ ३ ॥ धनमृत्तकिमह ॥ ॥
 कुं नमो श्री कोमावी देवी नमः ॥ कुं बिन्दु कं गकि ह
 संवत्सर पतिरूप मालिका ॥ कोमार्या वाहयदवी
 ध्यानपूष्यं नमस्तुते ॥ मधुमान ॥ कुं श्री श्री ह
 मृहहासविष्णुनाम यदंरु दस्त्राहा ॥ धर्मगुण ॥
 कुं कोमावी सह्याग्नी उमासाकः भूवतनरप्री
 धुं कुरु कुरु दस्त्राहा ॥ ध्यान ॥ कुं कोमावी कक व
 श्रीरामयूववाहिनी चतुर्भुजा धवी मूलतुलायां
 विन्दुपायं वः नृपवत्तुलायांः गकि कर्त्तिकं मृगं
 वा ॥ ध्वनी कोमावी देवी सावयत् ॥ नमः पां पू ॥

रुद्रकोमारीयस्वाहा ॥ नकुवर्णयस्वाहा ॥ म
 युनवाहनायस्वाहा ॥ भक्तिगामलधनायस्वाहा ॥
 महापात्रधनायस्वाहा ॥ नत्तवन्द्येनवायस्वाहा
 काटहेनवायस्वाहा ॥ मन्त्रयात्रधनायस्वाहा ॥
 गीर्वाणालनागनाजायस्वाहा ॥ नृदगन्धिनदी
 नाजायस्वाहा ॥ गन्धमानयर्वनायस्वाहा ॥ कर्ण
 रुद्रकायनमस्वाहा ॥ नत्तप्रहावेद्यायनमस्वा
 हा ॥ कर्णपासिदायस्वाहा ॥ काकर्णगनादिय
 नायस्वाहा ॥ अष्टहस्तायस्वाहा ॥ पंचदशक
 पात्यायस्वाहा ॥ रुनीयात्रकादसीयस्वाहा ॥
 मघापूर्वकालगुह्य उग्रहालायस्वाहा ॥ नृ
 गनवाभायस्वाहा ॥ ॥ पू. मा. दु. ॥ कुकोमारी

नकुवर्णयस्वाहा ॥ नकुवर्णयस्वाहा ॥ स्वायम्भुविन्द
 पात्रधनमस्तु मयुनवाहिनी ॥ ॥ वसि ॥ ॐ नृ
 लकोमारीममसर्वसुखांशसयस्मानयस्
 वन्द्यमयुनासनीद्वीप्रनियत्यष्टदेवलिङ्ग
 रुद्रकुरुटस्वाहा ॥ अधर्मा ॥ ४ ॥ अधर्मेष्टु
 विष्णुवीपूजा ॥ ॥ किरु ॥ ॐ गजवक्रधनं वं
 दविष्णुपात्रधनं सदाः वेष्टुवावाहयदधीत्य
 नपूष्यं नमस्तु ॥ मययान ॥ ॐ श्रीग्रीष्मय
 न्निष्कविष्णुनागायस्वाहा ॥ धूपगाल ॥
 ॐ विष्णुविविष्णुलोकसह्यागिनी श्वतनर

श्रीध्वंरुद्रंरुद्रस्वाहा॥ ॥ ध्यान ॥ वेङ्कटीस्याम
 बभ्रुलिंगगुरुजगनि. एकमूखाष्टिदया. चतुर्भु
 जास्याविन्द्याष्टके. त्रयनरुद्रास्याः. गणेशचक्रध
 रशी. वेङ्कटीद्वयगवयम्॥ भा. पा. पू॥ रुद्र
 टविङ्कटीद्वययनमस्वाहा॥ विष्णुगङ्गीयनम
 स्वाहा॥ उं दिव्यनूपीनीयस्वाहा॥ गुरुजगनी
 यस्वाहा॥ विनयद्वहेनवायस्वाहा॥ कूलिक
 नागनाजायस्वाहा॥ क्रीडयद्वहेनवायस्वाहा॥
 रुयंतिरुपपानायस्वाहा॥ नाकसाधियमयस्वा
 हा॥ प्रकाटिहकायनमस्वाहा॥ हमकूटपर्व
 नायस्वाहा॥ हमवर्मानदीनाजायस्वाहा॥ ल

श्रीवक्रसंभानायस्वाहा॥ वसुथी. द्वादशीय
 स्वाहा॥ हस्ताविनायस्वाहा॥ स्वागियस्वाहा॥ वू
 ह्वनायस्वाहा॥ ॥ पू. ना. पु॥ उं विष्णुविष्ण
 मनेत्रपटकानवीरुसंरुवा. स्वायूष्मविन्द्याष्ट
 व. नमस्कगुरुजसनी॥ ॥ वलि॥ उं नेत्रपटवेङ्क
 टीगुरुजसनीप्रणियत्यममसर्वगङ्गां सय २
 श्रीध्वंरुद्रंरुद्रस्वाहा॥ यधर्मा॥ ॐ निविष्णुवी
 पूजा॥ ५ ॥ अथदक्षिणवागहीपूजा॥ किमह न क
 ॥ उं पाशंरुद्रपनास्यावनककायवविन्दुकी॥ का
 लास्यावाहयंदवीध्यानपूर्यनमस्तुते॥ मयपा

॥ ॐ श्री कंहकालाग्निप्रियविघ्ननासाय
 कंहकालाहा ॥ धूप ॥ ॐ वावाहीरुगनाकः
 वनवदभीष्टकुरुकुरुट्ट्याहा ॥ ॥ ध्याना ॥
 ॐ वावाहीनकास्यवाहमेवेदनसन्निहः ॥
 कमरवाधिनशी वतुर्गुजाधनीमूलरुजाया
 विदुषां च ॥ अपनरुजायां स्वप्ररुटकध्या
 निशीमहीखाभनक्तिना ॥ ॥ श्री पा. प्र ॥
 रुट्टवावाहीदवीनमः स्थाहा ॥ विरुयवदुल
 नवाय स्थाहा ॥ कपालरुनवाय स्थाहा ॥ ॐ का
 लरूपिणीय स्थाहा ॥ ॐ महीषासनीय स्थाहा ॥

उल्काकरेनवाय स्थाहा ॥ यमनागनाजाय स्थाहा
 रुमदवनाम स्थाहा ॥ उर्वथा मयवताय स्थाहा ॥
 मोननाथाय स्थाहा ॥ वनहकाय स्थाहा ॥ वदप्र
 एनदीनाजाय स्थाहा ॥ कलिकरीषासम्भना
 यरुट्ट्याहा ॥ प्रकास्यक्रमपायाय स्थाहा ॥ सि
 धियासिद्धाय स्थाहा ॥ हानप्रलवेयाय स्थाहा
 पक्षे मिथ्यादभीय स्थाहा ॥ विष्णुवाटाश्रुत
 माटाश्रुताय स्थाहा ॥ हहस्यनिवानाय स्थाहा ॥
 ॥ ॥ पू. ना. ॥ वावाहीयाम्यनकाहानकान
 वीरुसंरुवाः स्थायूकविदुषाय ॥ नमस्कृतः
 हीषासनी ॥ ॥ वलि ॥ ॐ वावाहीयनद्यानरु

हा॥ भगवती यवनाय स्वाहा॥ नेत्रहात्री नदी नाजाय
 स्वाहा॥ मूसपूर्वाद्याय स्वाहा॥ पंचमिवगुर्दसी
 य स्वाहा॥ शुक्रवायाय स्वाहा॥ **मू. ना. तु ॥** ॐ नमो
 आयसीयवपी नारायकाय वीज संख्याः स्वाय
 धविन्द्याय चै. नमस्तु गुरुवाहिनी॥ वसी॥ ॐ
 पकाय वीज संज्ञा नमो आयनी महादवी. सकल
 पवित्रानसही नमो देवसि गुरु २ गुं २ पी व २
 जगमानस. सर्वविघ्नहन २ दह २ यव २ रुं २
 ईरुट स्वाहा॥ **यधर्मा ॥** ॥ **अथ वायव्यपूजा**
 ॥ ॐ नमः श्रीवामुद्राय॥ किमद॥ ॐ व्याघ्रवर्म
 कटिवर्ध. खजूरुटकविमूर्क. वामुद्रावाहयद

वीध्यानपूर्व्यनमस्तु ॥ **मध्ययान ॥** ॐ श्रीं
 हः देवीकाटकयविघ्ननाशय ईरुट स्वाहा॥
 धर्प॥ ॐ यवामुद्राकंकाय नूपदवी. भूवतनर
 भाघ्रुं नमस्तु स्वाहा॥ ध्यान॥ देवीकाटिकः
 वायुका. लयमा कालवयी ० क॥ उन्नविंशक
 पालन. इलुवंगालन सह॥ कालवन्द्य रेवव
 न. भूतकनागसंशत॥ उद्भवसहक. नगुग्री
 पर्वतग. धेवव. रयानकस. भनधालांधक
 सहिकं॥ सुवर्णप्रवेष्टयूक. सिक्कननावि
 धनव॥ ॐ यवामुद्रानकव. भुं. रुवांगी
 प्रमासनी. पिंगलाधकगी. प्रकमूखा. वगुह

कामरुद्राख्या. विन्द्यापंच अथ नरनाख्या क
 र्तिक पानमृगंवा. पुनासनस्किगा॥ अ. पा.
 पू॥ ॥रुद्रुचामुद्राय नमस्वाहा॥ कंकावच
 (मुस्वाहा॥ कालिकाय स्वाहा॥ धीवच (मुस्वाहा
 ॥ कपासु रेंववाय स्वाहा॥ पुनवाहनाय स्वाहा॥ उ
 मरुस्वाहा ॥ धनाय स्वाहा॥ कालच पु रेंववाय उ
 स्वाहा॥ अनकनागनाजाय स्वाहा॥ कंकावचूयी
 धीय स्वाहा॥ ग्रामनाय स्वाहा॥ देवकीर्तिय स्वा
 हा॥ श्रीयर्वनाय स्वाहा॥ उद्भव नृकाय स्वाहा
 नीववामानदीनामाय स्वाहा॥ देवकाटिकुण्या
 नाय स्वाहा॥ धावांधकस्सस्वानाय स्वाहा॥ नानी

पासिदाय स्वाहा॥ सुवर्णप्रणवेदाय स्वाहा॥
 सफमिश्रमावासिय स्वाहा॥ अक्षय धनस्वाय मगरि
 स्वाहा॥ अनिश्चयवानाय स्वाहा॥ ॥ पूना ॥
 कुं वामद्रावकवायूवायूवा. यकाववीरुसंरु
 वाः॥ स्वायूधविन्द्याय केनमस्तु पुनवाहिनिः॥
 वलि॥ यकाववीरुसंक्रान्तं वामद्रादवीसकलय
 निवानरा. रुद्रदेवसिगुकर गुर्गुर पिवरु रुमा
 नस्य सर्वावेद्य हनरदहरपवर रंरु रंरु रंरु स्वा
 हा॥ ॥ रुद्रिवा मुद्राद्वीपूना॥ अथमाहासकी
 पूजा॥ ॥ किमरु॥ ॥ रुद्रिवा मुद्राद्वीपूना॥ अथमाहासकी
 पूजा॥ ॥ रुद्रिवा मुद्राद्वीपूना॥ अथमाहासकी
 पूजा॥ ॥ रुद्रिवा मुद्राद्वीपूना॥ अथमाहासकी

मस्तुत॥ मययाना॥ ॐ श्रीगौरीकंदर्पः
 कृदविघ्ननाशायकंदर्पस्वाहा॥ धूप॥ ॐ महान
 श्रीगौरीनाकश्रवणनरगाधकंदर्पस्वाहा
 ॥ ध्यान॥ ॐ महानश्रीधुप्रवर्धकमरवापिन
 गां सिंहवाहनी वधुर्मुकाधनी मूलरक्षाया
 विरूपाक्षे नृपनरक्षायां पद्मरत्नध्वनी
 महालक्ष्मीरावयता॥ आ पा पू ॥ कंदर्पमा
 हानश्रीदेवीनमस्वाहा॥ नृपवयस्वाहा॥ ॐ
 कंदर्पकायस्वाहा॥ सिंहसनायस्वाहा॥ सीता
 नरेनवायस्वाहा॥ पद्मवर्धनवायस्वाहा॥ प
 मतागनाजायस्वाहा॥ दिव्यरूपिणीयस्वाहा॥

वनिप्रकृष्टपात्रायस्वाहा॥ महेश्वरायस्वाहा॥ व
 नवक्रायस्वाहा॥ महासिद्धियस्वाहा॥ महेंद्रप
 र्वनायस्वाहा॥ हम्बनीनदिनाजायस्वाहा॥ किं
 लिकसप्तमस्वानायस्वाहा॥ द्वादशकथासाय
 स्वाहा॥ नक्षत्रासिद्धायस्वाहा॥ नृमिन्मन्वा
 सियस्वाहा॥ पूर्ववृद्धयस्वाहा॥ नवनीयस्वाहा॥ स
 फवानायस्वाहा॥ पूजा॥ ॐ महालक्ष्मीकंदर्पः
 नमो कानवीरसंरवाः॥ स्वपूजाविरूपाक्षे नम
 कसिंहवाहिनी॥ ॥ वसि॥ ॥ ॐ कंदर्पमन्वरी
 कादवीधुमवर्धयकंदर्पवसिगुरुखरखाहिं
 कंदर्पस्वाहा॥ नमो॥ कंदर्पमा॥ कृतिमहानश्री

पूजा ॥ ॥ अथ मध्यम योग वसिष्ठा ॥ किमहा
 उंदक्रिहास्यान्दिमिह क्व वरुमहावीरं प्रतापी
 यमिप्रतायध्वानपूष्यं नमस्तुते ॥ मध्यमाया उ
 प्रीतीरुहः प्रताय सर्वविघ्ननाशय २ रुद्रस्वा
 हा ॥ धूप ॥ यं प्रतादिप्रमल्लोकदवमन २ रुद्र
 स्वाहा ॥ ॥ धनजाय ॥ उं अगमिहः सुखा
 वमिगकुरु रुं रुं रुद्र स्वाहा ॥ अथ २१ ॥ निना
 रुन ॥ अथ ध्वान ॥ नमदक्रिहास्यान्दिमि प्र
 तापी यमि कर्मनाजामहावनं ॥ क्व क्व वरुमहा
 वीरं प्रि मूरवरवदूगाधनः रुमदनुधाविशव
 वमहीषासनस्त्रिता नूधीनमदरुलद्रुधं पी

यनं स्वप्नयनमुधायनं ॥ स्वाहा वयनं ॥ आ वा
 पू ॥ ॐ दक्षिणधियनं स्वाहा ॥ प्रणाधीयनं स्वाहा
 कृष्णवर्णयस्वाहा ॥ कमदनुधनाय स्वाहा ॥ पाणि
 धनाय स्वाहा ॥ सर्वप्रणाधीयनं स्वाहा ॥ अंगतिदाः
 धर्म्मदनाय स्वाहा ॥ सर्वमानप्रदरूपप्रसम्नाय
 स्वाहा ॥ पू. वा. ३ ॥ ॐ कृष्णवर्णमहावीरं वेङ्कटेश्वरं
 लक्ष्मणं गङ्गानियामध्वं वेङ्कटेश्वरं नमोस्तुते ॥
 नम्यते ॥ वसि ॥ ॐ दक्षिणधियनं स्वाहा ॥ प्रणाधीयनं स्वाहा ॥ सर्व
 यक्षस्व अंगतिपि जगन्निर्ध ॥ ॐ दक्षिणधियनं स्वाहा ॥ ॐ ॥ ॐ नमो
 नमो स्वयं ययूता ॥ धनप्रदयूता ॥ ज्ञाप ॥ मन्त्र

अगतिर्यः सुखावतिगं कुरुं कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ १०८ ॥
 एगवन् सर्वविद्या मा कुरुं द्यादि ॥ आ पा य ॥ अस्मा
 कूलं मृगाय स्त्राहा ॥ अगत्याय स्त्राहा ॥ मामासह क
 लं स्त्राहा ॥ सर्वप्रगव्यं कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ वन्धुवर्ग
 कूलं स्त्राहा ॥ कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ अज्ञानदं अयं कुरुं रुट् स्त्राहा
 ॥ गुरुप्रतिपीठाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ अग्निदग्धा व. वी
 नहनाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ सिंधु व्याघ्रहनाय स्त्राहा
 आत्मापनाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ अवनवत्सनि कुरुं रुट्
 धाय. रुग्णप्रगपि न्नाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ नोनवथ
 प्रगनाकगगाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ नवकय. सर्वक. प
 सुयानिगगाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ दिव्यनविकरुमिह

पितृनां वीधनाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ यद्ववर्गमृगाय
 व. माहवर्गवयमृगा गुन्यसुभनवन्धुय कुरुं
 रुट् स्त्राहा ॥ अमगर्हीयहाताहानय कुरुं रुट् स्त्राहा
 पू. ना. ३ ॥ उं मरु २ महामरु सर्वदूर्जनविमाव
 नसुगतिप्राफय. विष्णुधनराजाय नधगताया
 हं सत्यकं वृद्धाय नमः ॥ १०९ ॥ विष्णुध
 य २ सर्वकर्मावनशविष्णुधनिय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ न
 हामृगमहाधालायाहवेगवनीनदीः यद्वा म
 सययनं निष्पन्नं वृद्धं प्रहमामिहं ॥ निसयादिर्य क
 ल्यैव प्रगदवा सुमानना उतीर्णवकांगानं गं प्र
 मं प्रहमामिहं ॥ वसि ॥ उं दक्षि ॥ सर्वप्रमाप्राप

यसर्वानीष्टभूगतिरुयपीतायुष्मन्तिथिर्गधावः
 प्रभववनी. नानका न प्रन हयनाभय. कुरुमानस्य
 नायूनावाहने स्वर्ग्यशुभ संरुसया फर्थ. सर्वपुन
 रुयनिवा न नार्थं दं वलिगृह २ पुन मूर्तिजद
 नमयं वलि नूधीन मत्स्यमास दधि इग्धमद कसस
 हिमन. भृगुशाय. गहृहाद न वासित पुन स्काना क
 वप्रा फ काम नार्थं दं वलिगृह २ र्त्तं २ ख ख खा
 हिं कं रुट् स्वाहा ॥ नार्थं न ॥ कं ॥ धन हा क म य पूजा
 नाहि नूय ॥ कि न हा ॥ ॥ ॐ न्ना वृष स रु क्य र्थं क
 दवधि पि नूमान वा ॥ यं क वि स मा व न म या द रु न
 माय नः. इति माया नु सर्व स रु प्य न त्वा र्च वि मू का

स्य पित न रु स्य ना द न पु न स्य न स्य म हा क्त्वं. क वा पि
 न वि श्व न. ना ना पु न मि सा द व्या ग या मि स सी मू क य
 ति र्थ म रुा दि मू न स्मि तं. आ दि ग न्धा दा ध र्त्तं पु न
 न मा मि ह ॥ न ॥ कं ॥ धन क र्म व लि रु ल सा क र्म पू
 जा ॥ जा प. ध ॥ ध्यान ॥ ॐ नि ग्म हे न वा यः ॐ वि नि र्
 कि ना क नू य न मू खि का नु स र्वं अ मि मं क न गृ ह्ना न
 स व्यः. न क रु व ना हा दि नी श्री श्री हं ध्यान पू र्ण न म स्तु
 तं ॥ पू न कि न हा ॥ न मा नि ग्म क प्र व र्त्त गृ ट वा ह न ध
 सो ना रु द र्त्त ह वं. न नि श्वा य ध्यान पू र्ण न म स्तु
 तं ॥ न ध्या न ॥ ॐ श्री श्री हं ह क्त्वा मि वि श्व ना भः
 य रुं रुट् स्वाहा ॥ धूप ॥ ॐ न नि श्वा य स ह या मि

न्यामोवाष्टसार्कश्रवण २१ रुद्रस्वाहा ॥ धनजा
 प ॥ कुंभनिश्चयाय रुद्रस्वाहा ॥ २१ ॥ निमाजना
 भान ॥ रुद्रवर्च रुद्रमास्यधनं वरुगुरुधनं
 शिखरवाना ॥ गृधवाहनं लोनाष्टदंष्ट्रधनं का
 म्धयलपयसागर्हसंरुतं नवांभनिमूर्तिराव
 यत् ॥ ३१ पा पू ॥ कुंभनिश्चयाय नमस्वाहा ॥ रु
 द्रवर्चयस्वाहा ॥ आदित्यपूजाय स्वाहा ॥ वरुगुरु
 जाय स्वाहा ॥ शिखरवानधनाय स्वाहा ॥
 गृधवाहनाय स्वाहा ॥ लोनाष्टदंष्ट्रवाय स्वा
 हा ॥ मृष्टम्याजायाय स्वाहा ॥ महिषीनक्रयाय ३
 स्वाहा ॥ काम्धयपूजाय स्वाहा ॥ ॥ पू. ना. तु. ॥

शीन्दनीलनविनाश्रुतिवानमूर्ति कल्याणवाजनयी
 मनुसैमव्यूकम्भः ॥ लोभनमस्तु रुवमारुवरुतका
 नी लोकविभनकदम्भनववद्यराकि ॥ वसि ॥ कुं
 रुद्रवर्चभनिश्चयाय रुद्रदंष्ट्रसायमायउदनमृ
 यवसिगुरु २ रुद्र २ जिघ्रंभूपपीवरुपानंममसर्व
 सत्त्वानाकेदुःखादयसर्वविष्टाहन २ कुं मृद्रुद्र
 स्वाहा ॥ ॥ धनरुद्रमाननं अर्घविद्य ॥ अद्यादि ॥ ॥
 कुंभनिश्चयाय दकिनाहिमूखाय लोनाष्टदंष्ट्र
 वाय मृष्टम्याजायाय महिषीनक्रयाय काम्धय
 ग्वयाय गुरुजायाय लोपीरुद्रस्यप्रजायतिद्व
 नाय मृकात्यरु सोहवाय सूर्यपूजाय मृयागर्ह

संरुगाय. इमिदमिदविषसंरुगाय. कमलप्रायक
 कोस्यदवगाय. नीलवागपूष्यगन्धपद्मविगपिः
 गाय. कूर्मवधसमानूठाय. दवदानवगंधर्वकूल
 सुमहीताय. भवतनरुगवंमनूष्यानांहितार्थय
 दंमक्रतपूष्यधूपवसिगृह्णतां. नमस्तुभयस्यकी
 यतस्तस्यप्रीतिकर्तागुणभक्तिरूपष्टिकृत्. कुरुमा
 नस्यभ्रायूनानाहेस्वर्यमनाहिसिक्तकामनार्थम
 निरुवायमूर्ध्वप्रतिष्ठस्वाहा॥ ॥ गीतपूजाभक्त्या
 ॥ ॥ धनं नृणावसिपूजा॥ किमद॥ नमानिः
 महेनवाय। विविकिनानेनृपत्तमेनाष्टदत्तमहवा
 यध्वानपूष्यं नमस्तुभ॥ मध्यपान॥ कीर्त्तनं हस्त

नाष्टविष्णुनामयइंद्रं रुद्रं स्वाहा॥ धूप॥ नीलमहेनवा
 यमृबतनरुभीपुंइंद्रं रुद्रं स्वाहा॥ ध्यान॥ कुं विवित्र
 किनाकनूपायमुखिकानुसुर्मधामिमकनमृग
 तर्कस्य. नक्रतववाहादिनिभाविइंद्रं ध्यानपूष्यं न
 मस्तुभ॥ आ. पा. पू॥ निमहेनवाय नमस्वाहा॥ कि
 लिकिलायस्वाहा॥ किविकिविनाकनूपायस्वाहा॥
 उच्छिष्टविष्णुविनामयस्वाहा॥ कुरुदयमात्रीयस्वाहा
 महावमात्रीयस्वाहा॥ आवाहनीयस्वाहा॥ महाआवा
 हनीयस्वाहा॥ उच्छिष्टरुद्रवादिस्तवनपत्रीवायस्वान
 मस्वाहा॥ पू. ग. व॥ नृपगन्ध॥ वसि॥ दिग्गप्रदिः
 मवायूविषमिदुदियमहाविक्रयाकवि. क्राटना

जायनेलाकप्रसाधकायविश्विकर्मनाजाय.सर्वा
 पदवनाभय.नधनीपूप्रभाकायगाकिइन्द्रपूष्टि
 कनूइंदुस्वाहा॥ नम्यन॥ क॥ ॥ धनदुधनापूजा
 ॥ ॥ नमस्तुपंचजकिन्यादियकेवर्हयध्यानपूष्य
 नमस्तुग॥ मद्ययान॥ क्रीं श्री हं॥ भूय॥ पंचेजकि
 न्यादिदवीश्रवतनरश्रीपुंइंदुस्वाहा॥ ध्यान॥
 नमस्तुपंचेजकिनीसर्वजकिनीदवतागलावनं
 विमूडमासा.वज्रमालाकलसातस्तु.पंचेज
 दिग्धामवसागन.घुघुनिर्मूरिवताहसित
 नुगवनाकया.वज्रवानाकावेनावनादिजकि
 नस्तुध्यानपूष्यनमस्तुग॥ नमो॥ जकिनी

यस्वाहा॥ नमोयस्वाहा॥ खनुनीहायस्वाहा॥ नृपि
 होयस्वाहा॥ पं.ना.पु॥ नमस्तुजकिनीनामनथाय
 धनमानमः॥ नृपिनीखनुनाहिकनमः॥ वसि॥ पं
 केजकिनीभूदिसकसयविवायथसूदंवसिगृह
 सुंकरइंदु॥ क॥ ॥ धनमूभनदंपूजा॥ भूमवर्
 महावीनंशुक्रयनिसर्वद्वयकननस्तु॥ मद्य॥ क्रीं श्री हं
 हं॥ भूयं॥ महाभमभनमहावीनंइंदुस्वाहा॥ ध्यान॥
 कुमनकभमभनवागिनंखजयाभधवंमदाभमभन
 रंनवंहावयत॥ नमो॥ प॥ वज्रग्रहावस्तुभनायस्वा
 हा॥ ग्रहावस्तुभना॥ कालां कनस्तु॥ कलंकस्तु॥
 नृदहस्तु॥ लक्ष्मीवस्तु॥ धालाधकस्तु॥ किनी
 किलस्तु॥ पं.ना.पु॥ ललानकवास्तुधेवीपस्तुभन

नाकसूनविष्णुष्टं गृह्ण २७ आदय २ किं धूपं गुपिच
 नुपानं ग्रंथिं ग्रंथं महाह नमना थय गहा पनय रुं रु
 स्वाहा ॥ गमस्याम ॥ ॐ महाकानधमवाहनीकार
 सिकसालिककासिबतासिसिद्धिपामिव लुब्ध
 वी- ७७ दं नाना नमपमं उदनमये वसिगृह्ण २ रुं रु
 ममसर्वसत्त्वानां विघ्नमावय २ सर्वदोषं रुं रु स्वा
 हा ॥ महाकालवसि ॥ कृमानमिखिवाहिनी ७७ दं व
 सिगृह्ण २ रुं रु पिव नुपानं किं धूपं ॐ आरुं रु
 रु स्वाहा ॥ कृमानवसि ॥ ॐ पिमवीपभूमवसिम
 मसर्वइष्टं सर्वसत्त्वानां सर्वोपद्रव नागहयप्रम
 मय ७७ दं नाना नमपन्नवसिगृह्ण २ रुं रु खखरवाहिं २

किं धूपं पिव नुपानं ॐ आरुं रु स्वाहा ॥ बहुपाल
 दनस ॥ धुतनाष्टा महाजाता लोकपालामहर्षिकाः गी
 धर्वाधीपयत्नाष्टा गधर्वा सहसेन्या आगच्छ २ ७७ दं वसि
 गृह्ण २ समयमनूस्मव भक्तिपूष्टी नकां क नू रुं रु पूर्वव्या
 दिसि स्वाहा ॥ पू ॥ ॐ विरूधको महाजाता लोकपालाम
 हर्षिका कृमानाधीपयित्नाष्टा कृमानुसहसेन्या ना
 गच्छ २ ७७ दं वसिगृह्ण २ समयमनूस्मव भक्तिपूष्टी क न
 रुं रु स्वाहा ॥ दकीन ॥ ॐ विरूपाक्षो महाजाता लोकपालामहर्षिका
 नागधीपयित्नाष्टा नागनां सहसेन्या
 आगच्छ २ ७७ दं वसिगृह्ण २ समयमनूस्मव भक्तिपूष्टी क
 नू रुं रु पयिमस्यां दिसि स्वाहा ॥ पयिम ॥ ॐ वेधवधु

ग्रहवलि॥ सूर्यसाममहीमयवृक्षदवगुनरुतुः॥
 मनिष्मगुहमाइककुनानादिदेवगा-नागयक्र
 गन्धर्वीसुनगनूकिंनव-महागगादिरीः सह-आ
 गच्छागच्छ-वृंदसर्वसंज्ञकंदसि-गृह्णरखादय
 पिवरमसत्त्वानांनकाकूर्वकु-ं आहंरुट्स्वाहा॥
 र्यवनकावलि॥ ॐ नमः प्रगितना-साहस्रप्रमर्द
 नीमहामाय-भीमवती-मक्रानूसावभीविशाधी
 पतिवृंदसर्वसंज्ञकंदननयवसिगृह्णरखाद
 यरपिवकुवलिबान्भीकिप्रकुधूपैः मसर्व
 सत्त्वानांनमायूयानाहृक्कन-सर्वरुनपिग्मा-अ
 दय-पीठाहनरदहृरहसिंकनूसर्वदाहंरुट्
 स्वाहा॥

स्वाहा॥ मूलपीठकवलि॥ ॐ नमः शूलपीठना
 यक्रमहिगहनदक्राय-वन्दकाकिमहिप्रहा
 य-खर्जपूष्ककयगहमाय-गृह्णरखरखाहिं
 रुट्स्वाहा॥ अज्ञांगवलि॥ अज्ञांगकयूपनपनस
 मविधसुनकनी-सुसेन्यपनिवानसहिगायक
 वृरवृंदवलिगृह्णरपनसेन्यशूनकमूलन-ग्रह
 नक्षरखर्जन-ॐ आहंरुट्स्वाहा॥ उग्रवलि॥
 ॐ मगाउग्र्यायमृहनाभय-दीर्घायकामना
 नक्षरहंरुट्स्वाहा॥ मृगवलि॥ ॐ मृगः
 यववनीय-गावकावमृहयनाभयवृंदव
 लिगृह्णरहंरुट्स्वाहा॥ सार्वभौमवलि॥ ॐ न

गानमूरव विरुटनूरव एममूरवया प्रमूरव
 उरुमूरव काकमूरव गृधमूरव गरुडमूरव
 स्नानमूरव गोकुलमूरव रत्नमूरव धनमूरव पि
 भवमूरव सप्तदीपानसह ॥ १०० ॥ दंपुष्य धूपदी
 पमूरव सर्वसंयुक्त गृह २ रुद्र २ पिवर २ ममस
 र्वसत्ता ना के कृमा नाग्य कृ ३ स्वस्वयन कृ ३ उं
 श ईं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ कृता वलि ॥ पिग्मवती पव
 दनी तागनीय ॥ रुद्र वली गृह २ उं श ईं रुद्र
 स्वाहा ॥ ० ॥ धनय के पुवाने पूजा ॥ ० ॥
 धनं लिख प्रपूजा ॥ पशूतर्पण ॥ ०० ॥ दय धाव
 र्पण सुतर्पण यमि ॥ मरुतु नया क ॥ डिं क
 मय श्री ईं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ उं शू नयन व मी

॥ कृता पूजा ॥

र्वशुभ्यगा कवूक्ष ॥ रुद्र हित्वा इर्न निरुद्र क ३
 र्वाव निमवा प्रया ॥ ॥ ०० ॥ रुद्र नय पशूतव पशु
 नां नृत्ता दानेन पून कर्मन विद्यता ॥ सखाव
 निग रुद्र स्वाहा ॥ रुद्र रुद्र सपन सजा किनया
 जा पूय ॥ नयन धून काडा उरुमा गेग दान ॥ उं
 यथानाम पशु ना उरुमा गेग दान संप्रदाय या
 मि ॥ मिल पूजा ॥ कर्पू व सुयक ॥ ०० ॥ रुद्राय
 क सवा रुगा ॥ ॥ ॥ उं नमः श्राव रुद्र स्वाय
 ॥ दशा सना सधिरु रुद्र ग सिद्धाः स्ना रुद्राः सुपूज
 ना कट पूना धन गंधर्व सिद्धाः ॥ ग्रह जा मय
 यः यक पि रुद्र मानि व वस नि दिव्य ॥ १ ॥ न
 रुद्र जा नृप शिवी न न रुद्र गां रुद्र सि दिव्य या

॥ कृता पूजा ॥ तापनः नाय

मिनासुमहस्यसंघुत्याः ७७ हायासुमनय
हार्थ ॥ २ ॥ यमनूपुष्टनिवसनिहत्याः यनंद
वयवसुमानययः ययादयासुगि विमंयुनय
नगनयः सर्ववयवसक्ति ॥ ३ ॥ यमीनयव
भंगमयवत्तालयवापिकृणाधिवासाः वापि
गजायधयः वयवत्तनयकूपयववजय ॥ ४ ॥ न
निद्वययः ययमययधाययवत्तनकाननयः मूय
लयदवगृहयवः विहानवत्तावधमयमः
थयमनासुसक्तजयाधो ॥ ५ ॥ ययगत्तना
धीयनगृहवसक्ति नय्यासुविधीयवसत्तन
यः ययकवृत्तयः महाययय ॥ ६ ॥ सिंहल
मक्राध्विगत्तनयवः वसक्तिधीयममहागवि

यु दिचयवृत्तनाययवमयममयविवसकी
यय ॥ ७ ॥ दृष्टापुसत्तायगगन्धमालीः पूष्य
बलिदियविविधिवरकृणागृत्तनु रूत्तनु पि
वत्तु निदंयकम्यसरुत्तजयवत्तु ॥ ८ ॥ दृष्टा
नु वक्तिमहत्तगसंघीः विमंयगृत्तनु वसि वि
सिमीः अग्नि यमीनेअगितृणाधीयमीयः द
वाअपयमीवायधनाधीयमि ॥ ९ ॥ दृष्टा
नरुणाधीयमि ॥ १० ॥ उरुवद्वार्कपीतामहयः
दवासरुत्तवियवः नागधनाधनागुत्तगधो
ः सभगा ॥ ११ ॥ यमिस्वकविद्वदनं वसक्त
कलेवदिनासुत्तनाः गृत्तनुगुष्टाः ससंन्या
सपुयमिद्वत्तनः सन्यगाः पूष्यवलिधय

निधायः सं ३ संसात्रकृदं घूलिगघूलिगः ५
 र्जकृदप्रवलयः ॥ ३ ॥ काननादयिरुडानवि
 वजयसुत्रसंश्रामविनः पं ३ पापनालगरुग
 वनिवनदसिद्धिवन्दनमस्तु ॥ १ ॥ वं ३ वं ३ वं
 मुदृष्टवकिगवकिगः ववेत्तादृग्निनगुः
 र्ज ३ कामनूपप्रहसिगवदनः खजपागमधन
 किः दं ३ दं ३ पानिगमवदिमीदिमः दिग्निमा
 लायमंगः ॥ ३ ॥ गिननकजयवुविजयनः
 सिद्धिवलयनमस्तु ॥ २ ॥ वं ३ धाववूपघूघू
 लिगघूलिगः घर्षनावावधार्यः हां ३ हासन
 पयिरुडानधविगः खवनकृष्णपालः दं ३ दं
 गनाथसकलजनहिनेः नस्यदहविमव

र्जकालनादेसकसहयहनः सिद्धिवन्दनम
 स्तु ॥ ३ ॥ वं ३ व्यामधार्युमतिहवनगः ना
 लपागावमस्तु ॥ कं ३ कालधार्यधकिनिध
 किगः यस्यहस्तुनिगः र्ज ३ र्ज ३ रूपग्रमनि
 खवनगंनस्यदवस्ववूपः मं ३ मं ३ कसिद्धिस
 कसहयहनः सिद्धिवलयनमस्तु ॥ ४ ॥ र्ज ३
 कालसदप्रहसिगमहमाः वामहस्तकपानं
 खं ३ खद्वंगहस्तुमवदिमिदिमः मनुमाः
 लाहृगमा ॥ र्ज ३ र्ज ३ नीयः हं ३ हसिगहाः
 सिर्गमीमनादः आयकमस्तु सिद्धिरुगव
 निवनदसिद्धिवलयनमस्तु ॥ ५ ॥ र्ज ३ का

सिकालवृषीनवपि. सिगमखि. सांडवोड
 मिजिफा॥ इंकालि धानना दपवयज्जनिः
 सिधकालविगंयगा कि. प्रकजानागि
 याग. वृत् ३ वृत् कामिनी के शुक्रभुः कंकालि
 कलवापी लणवमी ववदसिद्धिवलुनमस्त
 ॥ ७ ॥ वं ३ नावववोडवृ ३ धीवमुखे दीर्घ
 जिह्वाकलाल॥ पं ३ धमपसमयविज
 यगं गुरुदंठानिसूर. सरसग्रामवीनः
 जयविजयगं धृष्टिहावकका. श्री ३ का
 लनादरुगवणी ववद. सिद्धिवलुनमस्त
 ॥ ७ ॥ मं ३ काववृष ३ मगिजमममा. मय

नील

७

मालाग्रमस्त॥ कं ३ कालधारी घूचूरी गघः
 विगं धूधुमावी कूमावी॥ धृ ३ धूमवः सुयम
 नितवनकं कालपाप्मापीगरी. गं ३ विडावृ
 धममलयहृद. सिद्धिवलुनमस्त॥ ८ ॥ वं ३
 वृडवृड. वृ ३ धिवमुखि. दिर्घजिह्वाकनाय. कं
 ३ कनुवृष. समयविजयगं. सरदकदिनीस
 र॥ सरसग्रामवीन. जयतिविजयगं. सिद्धि
 वलुनमस्त॥ ९ ॥ धृतिवली कालव॥ ॥
 कं ३ काववृष. इव २ सकलं हगवनालहृद. कं
 श्री ३ मई २ दमदिममधिसंकालवृषागिमने
 प्रकलनेपिगम. येः उयगनगिसदा. कैय नाक
 मनागः. श्री ३ इव २ ममलयहृद. प्रायुव.

कृष्णपात्र॥ १ ॥ वं क्रीं श्री हसरु ह३ हसिग
 विवगंरुसुगंरु पीदांगी हसमा नूटुमनी उ
 मनीयममदुनिर्घागं घागेदु हनिपमिगव
 वसध्व वस्रवंद सुवन्दः सर्वहसर्वमय वि
 रुवचनमिग वंम्ररुवनमस्रगं॥ २ ॥ ज्ञां किं
 क्रीमानस्ररुवरयहनही सर्वरावविशव॥
 निर्मकमूकिमार्गवमरुषरासन सामसूर्या
 मिगंरुः नूयस्रसुवमूक अयनपनपन हा
 नमार्गप्रधान विनयमूववन्द अकूलकूल
 कूल श्रीमाहवनीनमस्र॥ ३ ॥ विं विरुह
 कवविवववदकिः ई३ द३ म३ ई३ धी हाक
 ई३ साविदान अनहननिवद हकिमूकिप्रदाक॥

हं३ साविधान नव२ गरुनसिद्धिद वा ममाः
 र्गं॥ ज्ञां किं हंयं कूसाध ककिरुविषयविनर
 डनमस्र॥ ४ ॥ हकाकायाददः खंसमिगरुव
 रयं सर्वविघ्नाककायः ग्रं ग्रिं ग्रं यं गं गर
 गद्यपमिगम सिद्धिसर्वार्थदायः॥ नुं गूं मूडा
 गजाकंगसपवनगम गीसुगानेकदर्कः नुं
 ई३ ई३ ग्रं गं सदिनदमूखधरविघ्ननाशन
 मस्र॥ ५ ॥ श्रीं श्रीं श्रीं कूमात्री कहरुमधि
 न ककीयाननूमागः मूडासंलग्निरीम कूर
 रसगमग्रामगं गुरु गुरु॥ वजागसिद्धिना
 थ मनववनवयं मल्यश्रावप्रदाकः प्रका
 क वापीमध्यस्वपमिगदयदो मूदूकानमस्र

महालक्ष्मीनमोः ॥ ११ ॥ ॐ मिमांसाका सप्त
 समाप्त ॥ मन्त्रविमर्शिन ॥ ॥ गुरुपूजा
 दक्षिणा ॥ पंचाङ्गना ॥ क्रमापन. सिद्धिमा
 हनी. सकलकलाय. दवयागलरु ॥ नित्य ॥
 धनसिलकाकाय ॥ समयावक्र ॥ ॐ मि
 हाकानविगय नष्टनागीका पूजाविधिस्त
 माफ ॥ वलिकाय ॥ राजनकुर्या ॥ गुरुं ॥
 यमस्तमनमरु ॥ नमोनवसिंहवीनकायाहक
 बांधुईकबांधुकर्मनिवाभु. धाल्यनिवाभु. क
 निसवभुवांधुवकिसवांधु. उरुनवाभुउरुनद

उभवि. पर्ववेवांधु. पर्वदुआलिदक्षिणवांधु. दक्षि
 हाइगावीपश्चिमवांधु. पश्चिमदुआनिवांधुका
 लनिश्वरंनिकालिकारवननिवावनिवावरुयाद
 धामदुआववजमाववजासिवा. श्रुनीकपूयः
 हनमरुविश्वकिलविलसः ककन ॥ धा १ ॥ गुरुं
 धपथनसादनयाया ॥



गुरुं नमस्कृत्य

ॐ नमोऽष्टाप्रतिसूत्राय ॥ स्वरावशुद्धा ॥ ४ ॥
 इति शुभ्यतानं वज्रपञ्चनसूत्रपनिकुण
 जमत्रमथ विष्वक्वदो स्थित विष्णुद्वि
 कात्रनिष्ठा त्राएगवतिः महाप्रतिसूत्राय नमः
 कूपरा मनुजाः पीतसितसर्वधर्मा स्वराव
 शुद्धाहं ॥ शुभ्यतानं वज्र त्वरावालाकाहं ॥
 ततोऽनन ॥ नीलनकचगुर्मुखो वा नमः
 सुयोत्रसूक्तपुत्रकवज्रगनस्वप्नवदनमूत्रावि
 गाः वामे वज्रवज्रपाणिनि लधन ॥ ४ ॥ पशुर्ग
 स्वधरावेष्टालं कृतजिन्नस्कास्तत्पर्यकस्थि
 ता ॥ श्रीमतिदविणवयत् ॥ पूर्वदिशि महासा

हसुप्रमंदिनीः स्वयं महामंशानूसा निष्ठाः प
 ष्टमहाभक्तिवतीः वामे महामायत्रीः द्वितीय
 पटः ब्राह्मणादिकोऽष्टः काली कालरात्री
 कालकन्धी वगालीः प्रतापि विगाहनहाम्ब
 गाः तत्त्वमकुटिनः प्रतिसूत्रं विनेगा ॥ पूर्व
 दिक्कात्रेष्विषमकुसुमैः वज्राकुशावजापा
 णीः वज्रसूतावजावजापद्मावजावजाव
 लीलावलीवृता एव यत् ॥ जायः धूपः अ
 कंषेनः पूष्यः न्यासः ॥ एगवः श्रीमत् ॥ श्री ३
 पञ्चनका देवदत्री एगताली कायपाद्याव
 त् ॥ श्रीमत्पुतिकुलाहा ॥ ४ ॥ धनी धूनजनाप

Handwritten text in a medieval script, likely Latin, on a heavily stained and aged parchment leaf. The text is arranged in several lines, with some characters appearing to be in a different script or dialect. The parchment is discolored and shows signs of significant wear and tear.

Handwritten text in a medieval script, likely Latin, on a heavily stained and aged parchment leaf. The text is arranged in several lines, with some characters appearing to be in a different script or dialect. The parchment is discolored and shows signs of significant wear and tear.